



कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत् छात्रों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

मंजू लता
प्रवक्ता (उर्दू)
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

महेन्द्र कुमार सिंह
उप शिक्षा निदेशक एवं प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

सारांश

विद्यार्थी शिक्षा प्राप्ति हेतु आवासीय अथवा गैर आवासीय विद्यालय में प्रवेश लेता है। शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास करते हुए उनकी योग्यताओं रूचियों क्षमताओं को वाह्य दिशा की ओर अग्रेषित करती है, प्रस्तुत शोध में आवासीय एवं गैर आवासीय विद्यार्थियों की वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी शैक्षिक उपलब्धि की तुलना जानने हेतु शोध कार्य को कक्षा 8 के 180 विद्यार्थियों पर किया गया। तुलना करने पर कई बिन्दुओं का विश्लेषण किया तथा शोध प्रक्रिया में वर्णनात्मक विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, एवं शोधार्थी ने जनपद पीलीभीत के 08 ब्लकों में से 04 ब्लकों यादृच्छिक गुच्छ न्यादर्श विधि से 05 उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं 04 कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय में स्तरीकृत सम्भाव्य न्यादर्श विधि द्वारा कुल 90-90 विद्यार्थियों का चयन रेंडम विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया शोधार्थी ने प्रश्नावली का प्रयोग वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि जानने हेतु किया गया स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग करते हुए प्रदत्तों का संकलन प्रदत्तो का विश्लेषण टी परीक्षण द्वारा किया गया। प्राप्त परिणाम से प्रदर्शित हुआ कि कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कूटशब्दावली:- कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय, व्याकरण।

प्रस्तावना :-

शिक्षा एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है मनुष्य इस प्रक्रिया में अपने उद्भव से अन्त तक धीरे-धीरे निरन्तर ज्ञान, अनुभवों, कौशलों एवं व्यवसायिक दक्षताओं को अपने रूचि योग्यता, वातावरण, सुविधा, आवश्यकता तथा परिस्थिति के अनुसार सीखता है, बच्चा जिस परिवेश में रहता है, वैसा ही सीखता है। भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। बहुभाषी देश में प्रत्येक राज्य में निवासरत जनसंख्या अपना कार्य मातृभाषा में सम्पन्न करती है। अतः शिक्षा की प्रारंभिक अवस्था में शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होना चाहिए क्योंकि मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है –

माँ की भाषा। जिसे बालक माँ के सानिध्य में रहकर सहज रूप से सुनता और सीखता है। जिस भाषा का प्रयोग बच्चा सर्वप्रथम अपनी माँ से सीखता है और जिसके माध्यम से वह परिवार एवं समुदाय में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है। उसे ही प्रारंभिक ज्ञान के लिए माध्यम बनाया जाना आवश्यक है क्योंकि इस अवस्था में उसे विद्यालय में भी परिवारिक वातावरण की आवश्यकता होती है। भाषा शिक्षण का मूल उद्देश्य है— सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना।

इसलिए भाषा से सम्बन्धित इन सभी उपलब्धियों से विद्यार्थियों को परिपूर्ण कराना सभी शिक्षकों का उद्देश्य होना चाहिए।

क्योंकि शिक्षा जीवन में बेहतर सम्भावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरबाजे खोलती है, यह आत्म विश्वास को विकसित करती है। व्यक्ति निर्माण में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है जो विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उसकी आन्तरिक प्रतिभाओं का विकास करते हैं। तथा शिक्षक ही आकलन के आधार पर योजनायें बनाकर, अध्ययन, अध्यापन कार्य को रूचिकर बनाकर शैक्षिक उपलब्धि स्तर को बढ़ाने में सहायता प्रदान करते हैं।

यह शोध वर्तनी तथा व्याकरण सम्बन्धी है, इस विषय पर प्रकाश डालते हैं।

- व्याकरण वर्तनी शब्द का अर्थ है, अनुसरण करना अर्थात् पीछे-पीछे चलना भाषा के उच्चारित रूप या बोलने में जो कहा जाता है या उच्चारित किया जाता है उसी के अनुरूप या अनुसार लिखा भी जाता है, इसे ही वर्तनी कहते हैं।
- भाषा का लिखित रूप वर्तनी की सहायता लेता है, अतः भाषा के उच्चारित रूप उसी रूप में लिपिबद्ध करना वर्तनी कहलाता है।
- वर्तनी की सहायता से युग-युगों से संचित ज्ञान हमें आज भी लिखित रूप से होता है।
- वर्तनी के द्वारा लिपिबद्ध साहित्य और ज्ञान-विज्ञान देश की सीमाओं को भी लांघता है।
- वर्तनी एक ऐसा माध्यम है, जिससे दूरस्थ लोगो में पत्र और संदेश का आदान प्रदान होता है।

वर्तनी की एक रूपता से भाषा का मानक रूप स्थायी बनता है। वर्तनी की सहायता से भाषा लिखित रूप प्राप्त करती है यदि वर्तनी अशुद्ध हो तो स्वाभाविक है कि भाषा भी अशुद्ध हो जाती है, इससे भाषा की मानकता पर प्रभाव पड़ता है।

कूटशब्दावली का परिभाषीकरण:-

- **कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय-** भारत सरकार द्वारा अगस्त 2004 में उच्च प्राथमिक स्तर पर आवासीय विद्यालयों की स्थापना के लिए शुरू किये गये हैं जिसमें कक्षा-5 में ड्राप आउट अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और अपसंख्यक बालिकाओं का निशुल्क प्रवेश होता है।
- **परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय-** शासन द्वारा संचालित वह विद्यालय जो कक्षा-6 से 8 तक के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं।

व्याकरण:- इस विधा के अन्तर्गत बोलचाल एवं साहित्य में प्रयुक्त भाषा का स्वरूप गठन और रूप परिवर्तन का विवेचन किया जाता है।

शोध का उद्देश्य :-

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों में वर्तनी एवं व्याकरण सम्बन्धी उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पना :-

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्याकरण एवं वर्तनी की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध सीमांकन:-

1. प्रस्तुत शोध कार्य पीलीभीत जिले के चार विकास खण्डों में संचालित कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालयों में अध्ययनरत बालिकाओं तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य पीलीभीत जिले के चार विकास खण्ड में संचालित उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य केवल कक्षा 8 में पढने वाले विद्यार्थियों तक ही सीमित है।

शोध प्रक्रिया :-

शोध विधि- इस अध्ययन में वर्णनात्मक विधि की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श, चयन विधि:-

प्रस्तुत अध्ययन में जिला पीलीभीत के 08 विकास खण्ड में से 04 विकास खण्डों का यादृच्छिक गुच्छ संभावित प्रतिचयन विधि से किया गया। तत्पश्चात इन्हीं चार (04) विकास क्षेत्रों के कुल 05 परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा 04 कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों का चयन स्तरीकृत संभावित विधि द्वारा किया गया, इन्हीं विद्यालयों में से 180 विद्यार्थियों का चयन कमबद्ध प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया है।

उपकरण :-

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विश्लेषण :-

प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, टी-टेस्ट की गणना से की गई।

परिकल्पना :-

कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों में व्याकरण एवं वर्तनी की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या:-

क्र०स०	विद्यालय	छात्र संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	ज.मान	परिणाम
1	क.गा.आ.बा. वि.	90	19.09	10.02	0.98	सार्थक अन्तर नहीं पाया गया
2	उ०.प्रा.वि	90	10.01			

उपरोक्त तालिका में दर्शाये गये विवरणानुसार आवासीय एवं गैर आवासीय दोनों समूहों का मध्यमान क्रमशः 19.09 एवं 10.01 पाया गया। तथा दोनों समूह का सांख्यिकी गणनानुसार मानक विचलन 10.02 पाया गया एवं ज.मान 0.98 पाया गया। चूकिं क₁;178₂ से सम्बन्धित 0.05 के सार्थता स्तर पर अंकित मान (1.97) से प्राप्त ज.मान 0.98 कम है।

इस प्रकार दोनों समूहों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत लघुशोध हेतु संकलित आंकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समावेशित पाठों के प्रति दोनों स्तर के विद्यार्थियों का दृष्टिकोण समान है।
- दोनों समूहों के विद्यार्थियों की पढ़ने की आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध मध्यम स्तर का पाया गया। अतः स्पष्ट है कि पढ़ने की आदत होने पर शैक्षिक उपलब्धि में उन्नति होना सम्भव है।
- बाल पत्रिकाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में पढ़ने एवं व्याकरण वर्तनी की समझ विकसित कर सकते हैं।

सुझाव :-

विद्यार्थियों को पुस्तकालय में साहित्यिक एवं बाल कथा, पुस्तकों एवं पत्रिकाओं को उपलब्ध कराते हुए विद्यालय में उपयोग करने हेतु प्रोत्साहित करें।

- शिक्षण सहायक सामग्री का नियमित प्रयोग शिक्षक करें
- कक्षा शिक्षण प्रक्रिया के मध्य में शिक्षक को शब्दों का उचित अर्थ व्यक्त करते रहना चाहिए।

आभार:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश की वित्तीय सहायता के माध्यम से श्री दरवेश कुमार वरिष्ठ प्रवक्ता जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलीभीत के मार्गदर्शन में सम्पन्न किया गया है।

सन्दर्भ :-

- डा0 पाण्डेय पृथ्वी नाथ— वृहद सामान्य हिन्दी विद्या प्रकाशन मन्दिर लिमिटेड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली
- डा0 बाहरी हरदेव (2022) – हिन्दी शब्द— अर्थ—प्रयोग अभिव्यक्ति प्रकाशन, बी-31 गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद,
- डा0 प्रसाद वासुदेवनन्दन(1959) – आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना भारती भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, पटना,
- डा0 राकेश विष्णु दत्त (1991) – आधुनिक हिन्दी लेखन की ऊर्जा पूर्वोदय प्रकाशन,
- डा0 टण्डन पूरनचन्द (1999) – वस्तुनिष्ठ हिन्दी,
- डा0 शर्मा मुनीश – हिन्दी विभाग दिल्ली
- शर्मा भक्त राम (1995) – गाँधीबाद और हिन्दी काव्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
- लाल, पुरुषोत्तम (1992) हिन्दी शिक्षण, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
- लाल रमन विहारी, हिन्दी शिक्षण मेरठ: स्तोगी पब्लिकेशन्स
- डा0 जोशी राजीव – हिन्दी वर्तनी की समस्या
- चौधरी नीतू – हिन्दी भाषा सम्बन्धी अशुद्धियाँ, महात्मा ज्योतिबा फुले विश्व विद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

